Seventeenth Loksabha

>

Title: Issue regarding plight faced by para teachers in West Bengal.

डॉ. सुकान्त मजूमदार (बालूरघाट): माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे बोलने का मौका देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ।

बंगाल बहुत पहले से ही शिक्षा और शिक्षक को सम्मान देता रहा है । डॉ. सौगत राय जी वहाँ रहते हैं । हम भी उनका रेस्पेक्ट करते हैं क्योंकि वे एक प्रोफेसर हैं । मैं भी एक असिस्टेंट प्रोफेसर हूँ ।

आज बंगाल में शिक्षकों की हालत बहुत ही खराब है । आज जब मैं यहाँ पर बोल रहा हूँ, तो कोलकाता में शिक्षा भवन के बाहर पैरा टीचर्स अनशन पर बैठे हैं । वे सलाइन लेने से भी डेक्लाइन कर चुके हैं और जब वे मरेंगे, तो अपनी देह भी दान कर देंगे ।

केन्द्र सरकार पैरा टीचर्स को प्राइमरी कक्षा तक 15 हजार रुपये देती है और उसके ऊपर 20 हजार रुपये देती है । लेकिन राज्य सरकार द्वारा पैरा टीचर्स को पूरी राशि नहीं दी जाती है । वहाँ से पैसे लेकर उसका इस्तेमाल दूसरे कार्यों में किया जाता है, जैसे स्कूलों में बैग और चप्पल देने के लिए आदि । इसके पहले भी, जो पीजीटी और टीजीटी टीचर्स थे, वे अनशन पर बैठे थे ।

सौगत दादा अभी जेएनयू में छात्रों पर लाठी चार्ज के बारे में बात कर रहे थे । मुझे इस बात का दुख हो रहा है कि बंगाल में जब कोई टीचर अनशन पर बैठता है, तो वहाँ पर लाइट ऑफ कर दी जाती है और पुलिस एवं मीडिया को वहाँ से हटाकर उनके ऊपर लाठी चार्ज की जाती है ।

बंगाल में एक कहावत है- "Chalun khonje sucher phuto."

अगर इंग्लिश में इसका तजुर्मा करें, तो इसका मतलब है- sieve is searching for the hole of the needle. इसलिए हमारे यहाँ शिक्षकों की बहुत ही

खराब हालत है । केन्द्र सरकार इसमें हस्तक्षेप करे और शिक्षकों के सम्मान को बचाए ।